REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

मिथिला के पर्यटन स्थल की प्रासंगिकता व महात्मय : एक अध्ययन

राजेश कुमार
बी० कॉम०, एम० कॉम०,
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वद्यिालय, दरभंगा

भूमिका

मिथिला के पवित्र भूमि पर अनेकानेक पौराणिक स्थल मौजूद है। पर्यटन के दृष्टिकोण से मिथिला में सांस्कृतिक, पौराणिक, पर्यावरणीय, धार्मिक आदि अनेक तरह के पर्यटन स्थल है। इन स्थलों की अपनी.अपनी विशेषताऐं है। मिथिला देश को ही नहीं विदेशियों को भी अपनी ओर आकर्षित करने में सक्षम है।

मिथिला का अतीत प्रारंभ से ही गौरवशाली रहा है। प्रकृति के अन्य साधनों से सम्पन्न मिथिला के धरोहरों की गौरव आदि काल से प्रभाव में रहा है। यह अनेकानेक विद्वानों, विचारकों, प्रसिद्ध संत. महात्माओं, राजा, महाराजाओं, धार्मिक स्थलों के कृति से भरी पड़ी है।

भौगोलिक दृष्टि से मिथिला

भौगोलिक दृष्टि से प्राचीन मिथिला उत्तर में नेपाल से दक्षिण में गंगा किनारे तक फैली हुई थी। प्राचीन मिथिला के प्रमुख सम्राट अयोध्या नरेश श्री राम के श्वसुर एवं सीता के पिता महाराज जनक थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में मिथिला के प्रमुख भागों में उत्तर में मधुबनी जिला से लेकर दक्षिण में गंगा के किनारे तक एवं पूर्व में पश्चिम बंगाल की सीमा से लेकर पश्चिम में लिच्छवी गणराज्य की राजधाानी वैशाली तक है।

इसका सम्पूर्ण भाग गंगा के मैदानी भाग में फैला है। यहाँ की मिट्टी समतल एवं उपजाऊ है। पानी स्वच्छ एवं पीने लायक उत्तम है।

- **प्रमुख फसल** : धान, गेंहूँ, मक्का, गन्ना, अरहर, चना, मूँग, मसूर, मरूआ, पान, मखान, मछली।
- **प्रमुख नदियाँ** : कोशी, कमला, बलान, गंडक, बूढी गंडक, बागमती, करेह, अधवारा, गंगा है।

मिथिला के दरभंगा प्रमंडल में (दरभंगा, मधुबनी, समस्तीपुर) में अनेक दर्शनीय स्थल है जैसे महाकवि विद्यापति का जन्म स्थल, मंडन मिश्र अयाची मिश्र का ग्राम, उग्नेश्वर महादेव (उगना महादेव) का मंदिर, कपिलेश्वर स्थान, विदेश्वर स्थान, कुशेश्वर स्थान, दरभंगा महाराज का किला, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, बिहार की एकमात्र संस्कृत विश्वविद्यालय कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, अहिल्यास्थान, उच्चैठ भगवती मंदिर, राजनगर, मधुबनी का किला आदि।

14 नवंबर 2000 के बिहार.झारखंड बंटवारा के बाद जब खनीज संपदा से परिपूर्ण क्षेत्र झारखंड में चला गया है और बिहार में वित्त प्रबंधन के लिए आवश्यक है कि दरभंगा प्रक्षेत्र के प्रमुख दर्शनीय स्थलों को चिन्हित कर इसको पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जाय। इससे न केवल अल्प मात्रा में धन लगाकर अधिक लाभ अर्जन किया जा सकता है बल्कि यह रोजगार सृजन की दिशा में भी कारगार साबित हो सकता है। इन

दर्शनीय स्थलों के विकास से विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी सहायता मिलेगी। यहाँ के लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा, आय में वृद्धि होगी और विकसित बिहार बनाने में मदद मिलेगा।
दरभंगा प्रमंडल के प्रमुख पर्यटन स्थलों के विवरण निम्नलिखित हैं –

● श्री कपिलेश्वर स्थान

मधुबनी रेलवे स्टेशन से 4 किलोमीटर पश्चिम स्थित महादेव का यह प्राचीन स्थल अपने कृति के लिए त्रेता युग से ही प्रसिद्ध है । सड़क मार्ग से सटे कपिलेश्वर स्थान मंदिर अति सुन्दर एवं मनोवांछित फल देने वाला है।

किवंदति है कि त्रेता युग में जब यहां घनघोर जंगल था और यहीं कपिल मुनि का आश्रम भी था तो सर्वप्रथम कपिल मुनि ने ही महादेव को देखा एवं पूजा अर्चना किया। तब से इस स्थान का नाम कपिलेश्वर स्थान पड़ा। शनैः.शनैः सर्वप्रथम नेपाल के राजा द्वारा यहाँ 8 कोण वाला मंदिर बनवाया गया जो 1934 ई० के भयानक भूकंप में क्षतिग्रस्त हो गया। तत्पश्चात दरभंगा के तत्कालीन महाराज द्वारा 1937 ई० में वर्तमान मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर के पास कुल 18 धूर भूमि मात्र है।

कपिलेश्वर महादेव मंदिर से सटे पश्चिम (लगभग 20 मी०) की दूरी पर पार्वती मंदिर है जिसका निर्माण एवं स्थापना सन् 1947 ई० में दरभंगा महाराज द्वारा किया गया। जिसके प्रधान पुजारी स्वयं दरभंगा महाराज ही थे। मंदिर के पास कुल 52 बीघा की भूमि है जो पार्वती ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं नियंत्रित होता है।

सम्प्रति इस विशाल भूखंड में तालाब, आम का बगीचा, जोत भूमि, बाजार एवं परती भूमि है। मंदिर से सटे 4 किलोमीटर दक्षिण वनदुर्गा स्थान है, 15 झड उत्तर उच्चैठ भगवती का मंदिर है। एवं 18 झड पूर्व उगना महादेव का मंदिर है । मंदिर की प्रासंगिकता व महात्मय के अनेक अनोखे उदाहरण है जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख है।

- कपिलेश्वर स्थान महादेव मंदिर के प्रांगन में नीम का पेड़ है जिसके नीचे ही मदन उपाध्याय तंत्रसिद्ध हुए थे।
- मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति ठाकुर के पिताजी गणपति ठाकुर द्वारा यहीं तपस्या किया गया एवं इसी तपस्या के फलस्वरूप विद्यापति का जन्म हुआ।
- आज भी दूर.दूर से लोग यहां आकर पूजा अर्चना करते है तथा मनोवांछित फल प्राप्त करते है। यहां सालों भर सैकड़ो दुकाने सजी रहती है। खासकर सावन महीना में विशेष रूप से मेला लगता है। सावन माह के सोमवार के दिन यहां भक्तों की अपार भीड़ लगी रहती है। यहाँ हर साल सावन में जयनगर कमला नदी से पवित्र जल भर कर श्रद्धालु बाबा कपिलेश्वर महादेव का जलाभिषेक करते हैं। सावन में करीब दो से ढ़ाई लाख कांवरिया यहाँ पहुँचते हैं।
- वर्तमान में लगभग 200.250 परिवारों की स्थायी आजीविका का स्त्रोत यह बाजार है।

मंदिर के आसपास कहीं भी धर्मशाला या होटल नहीं है जिससे यात्रियों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है तथा इतनी प्रसिद्धि रहते हुए भी विदेशी पर्यटक होटल एवं अन्य सुविधाओं के अभाव में यहां आने से कतराते है।

यहां शौचालय, स्नागार की भी अत्यंत आवश्यक्ता है ।

● श्री उगना महादेव मंदिर :

मधुबनी जिला के पंडौल प्रखंड मुख्यालय से सीधा पूरब सड़क मार्ग द्वारा 3 कि० मी० एवं सकरी जंक्शन तथा पंडौल रेलवे स्टेशन के बीच उगना हॉल्ट से सटे भगवान महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। देश के कोने कोने से लोग आकर भगवान का दर्शन करते है। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। जो विश्वभर में विख्यात है।

इस स्थान के संबंध में एक सच्ची कथा प्रचलित है। महाकवि विद्यापति को प्रारंभ से ही शिव पर अटूट विश्वास था। वे शिव की अराधना पूर्ण प्रेम.भाव से किया करते थे। उनके भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव विद्यापति जी को दर्शन देना चाहें परंतु मिथिला की अनुपम, अद्वित्तीय छवि को देखकर भगवान के मन में मिथिला में रहने की आश जगी। उन्होनें एक नौकर का वेश बनाकर विद्यापति जी के यहाँ पहुँचे। उस समय

महाकवि शिव की पूजा कर रहे थे, तब पहले से रह रहे नौकर को उन्होने वहाँ नौकरी करने की इच्छा जताई। पूजा समाप्ति के पश्चात पुराने नौकर ने महाकवि को सारा हाल सुनाया परंतु प्रस्तावित नौकर की दशा को देखकर महाकवि ने मना कर दिया। फिर उस प्रस्तावित नौकर का यह प्रस्ताव कि उसे माहवारी नहीं चाहिए वह सिर्फ भोजन प्राप्ति पर उनका सारा काम कर देगा तथा पुराने नौकर के आग्रह पर महाकवि ने उन्हें नौकरी पर रख लिया।

जब विद्यापति द्वारा नौकर का नाम पूछा गया तो उन्होने अपना नाम **'उगना'** बताया। घर एवं माता. पिता का पता पुछने पर उगना ने कहा कि उसे कुछ पता नही है वह इसी तरह घूम.घूम कर नौकरी करता है। फिर उगना को गाय एवं बैल को खिलाने की जिम्मेवारी दे दी गई। कुछ ही दिनों में उगना के तरक्की पूर्ण कार्य को देखकर महाकवि ने उन्हें घर के अन्य कार्यो को भी करने की इजाजत दे दिया। इस कार्य में भी मनोनुकूल सफलता देखकर उगना विद्यापति के प्रेम.पात्र बन गए एवं उन्हें सिर्फ पूजा सामग्री की व्यवस्था का कार्य रहने दिया गया और अन्य समयों में वे सिर्फ महाकवि के साथ रहा करते थे।

एक दिन कुरसों दसौत के राजा 'जमींदार' (यह स्थान उगना मंदिर से 1 झड पश्चिम एवं पंडौल प्रखंड से 2 झड पूरब है जहाँ भवनों के अवशेष आज भी है) महाकवि के ग्राम विस्फी तसील के लिए गए। महाकवि के पूजा पर बैठे होने के कारण उगना को तसील चुकाने का संवाद कहकर चले गए। पूजा समाप्ति पर उगना महाकवि को इन बातों से अवगत कराया फिर विचार कर अगले दिन की योजना बनी की अगले दिन महाकवि उगना के साथ तसील चूकाने चलेंगे। अगले दिन दोनों साथ चलकर तसील चुकाए तत्पश्चात महाकवि का मन अपने ससुराल सिंहाइसों जाने को हुआ। यह स्थान वहां से पूरब 15 झड की दूरी पर अवस्थित है। इस धारणा को लेकर जब दोनों आगे बढ़े तो वहीं (वर्तमान उगना स्थान) सुंदर डीह (ऊँचाई 35 फीट लगभग) देखकर महाकवि की इच्छा आराम करने को हुआ। वहीं दोनों रूक गए फिर महाकवि ने पानी लाने के लिए उगना को कहा। उगना कमंडल लेकर निकला लेकिन उस वन में कहीं पानी नहीं था। साक्षात शिव के लिए कुछ भी असंभव नहीं था। वे वहीं कुछ दूरी पर अपनी शक्ति से कूप बनाए जो अभी भी है एवं कमंडल में जल लेकर आ गए। जब विद्यापति ने जल ग्रहण किया तो जल का स्वाद गंगा जल के समान था। महाकवि को उगना पर पूर्व से भी संशय था ही, इस आश्चर्यजनक कार्य को देखकर उनकी शंका और गहरा गई। वे उगना से अपना हाल बताने के लिए कहने लगे। काफी जिद के बाद एक शर्त की वे इस घटना को किसी को नहीं बतायेंगे और वे जिस हाल मे रह रहे हैं उसी हाल में रहेंगे। इस पर शिव ने अपने रूप में विद्यापति को दर्शन दिए।

मंदिर विशाल एवं बड़ा है मंदिर के प्रांगन में अन्य कई मंदिरें है पार्वती मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, हनुमान मंदिर, शनि मंदिर एवं अन्य मंदिरे हैं। मंदिर के आगे प्रांगन में कूप से उतर काली का विशाल मंदिर निर्माणाधीन है।

मंदिर के पास धर्मशाला उपलब्ध है परंतु विकास की जरूरत है। सम्प्रति मंदिर का देख.रेख एवं प्रबंध एक स्थानीय समीति द्वारा किया जाता है।

मंदिर के पास आय के अनेकों एवं सुगम्य साधन उपलब्ध है। इस मंदिर को पर्यटक स्थल के रूप मे विकसित कर आय के साधन बढ़ाए जा सकते है। पोखर में मछली एवं मखाना की खेती की जा सकती है। स्थानीय बाजार को बढ़ावा देकर रोजगार के साधन बढ़ाए जा सकते है। मंदिर में पूर्व से पुस्तकालय उपलब्ध था जो आज छिन्न.भिन्न हो गया।

● श्री विदेश्वर स्थान :

सड़क मार्ग द्वारा – NH 57 से सटे रेलवे मार्ग द्वारा – 1 झड दक्षिण लोहना रेवले स्टेशन, प्रखंड + अनुमंडल (6 KM पूर्व) झंझारपुर, जिला – मधुबनी। 14 वीं शताब्दी में निर्मित महाकवि विद्यापति के संबंधी चाचा सर्व श्री विदेश्वर ठाकुर द्वारा निर्मित होने के कारण इस स्थान का नाम वीदेश्वर स्थान जो अपभ्रंसित होकर विदेश्वर स्थान है। यह स्थान मिथिला का प्राचीन पवित्र तीर्थ स्थल है यहाँ के मंदिर की बनावट 14 वीं शताब्दी का है। यहाँ मनोवांछित फल प्राप्त करने वाला तीर्थ स्थल है यहाँ दूर.दूर से लोग आकर पूजा अर्चना किया करते है। यहाँ प्रतिदिन सैकड़ों श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है। वर्तमान में लगभग दो सौ परिवारों की आजीवीका यहाँ से चलती है।

मंदिर परिसर में धर्मशाला उपलब्ध है, मंदिर को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसीत कर आय के साधन बढ़ाए जा सकते है।

- **अहिल्यास्थान**

कमतौल रेलवे स्टेशन से 3 झड पश्चिम स्थित अहिल्या स्थान त्रेता युगीन दिव्य सच की बखान करने वाला यह स्थल अद्वितीय है। यहाँ की प्राकृतिक बनावट अत्यंत सुंदर है। साथ ही यह स्थल पर्यटन का उत्तम स्थान है। यहाँ देश.विदेश से लोग आकर इस पावन भूमि का दर्शन करते हैं तथा शांति व इच्छित फल पाते है।

यह वही स्थान है जहाँ भगवान श्रीराम गुरू विश्वामित्र जी एवं अनुज लक्ष्मण के साथ ताड़क वन से मिथिला नरेश श्री जनक जी महाराज द्वारा घोषित सीता स्व्यंवर के लिए रचित धनुष यज्ञ में भाग लेने हेतु जनकपुर जाने के क्रम में रूके थे। इस स्थान पर महर्षि गौतम का आश्रम था यहाँ गौतम मुनि द्वारा श्रापित होकर उनकी पत्नी अहिल्या पत्थर बन चूकी थी।

इस घनघोर जंगल में एक छोटी सी कुटिया जिसे मुनिवर छोड़ चुके थे और वहाँ खड़ी पत्थर की मूर्ति को देखकर भगवान श्रीराम ने अपने गुरू महराज से पत्थर बनी मूर्ति के विषय में प्रश्न पूछा –

आश्रम एक दीख मग माहीं। खग मृग जीव जंतु तहँनाहीं।
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा विसेशी।।

श्री राम द्वारा पूछे गए प्रश्नोपरांत मुनि ने उन्हें सारी बातें बतायी।

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।
चरण कमल रज चाहति कृपा करहु रघुवीर।।

इस प्रकार सर्वव्यापी श्रीराम सकल कथा जानकर अपने चरणों की धूल शिला से स्पर्श कराकर अहिल्या का उद्धार किया जिससे अहिल्या पुनः शिला से नारी बन गई।

लाखों वर्षो के बीत जाने के बाद भी यह स्थान आज भी अपनी पुरानी गाथा को सच.सच बखान कर रही है। अहिल्या माता के कुटी के स्थान पर स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा कालक्रमानुसार एक मंदिर का निमार्ण किया गया है एवं साधु संतों तथा आगन्तुकों के लिए आश्रम का निमार्ण कराया गया है। मंदिर में श्रीराम के चारो भाइयों की मूर्ति, अहिल्याश्रम से मुक्ति का पूर्ण दृश्य की मूर्ति, महर्षि गौतम की मूर्ति, एवं गौतम अहिल्या की पुत्री अंजनी जो अपने गोद में स्व पुत्र हनुमान जी को रखे है एवं बगल में गौतम पुत्र श्री सतानंद जी महाराज की मूर्ति अनुपम रूप से विराजमान है। श्री सतानंद जी महाराज प्रकांड विद्वान थे जो मिथिला नरेश जनकजी के राज पुरोहित थे एवं श्रीराम सीता विवाह कराने वाले पुरोहित जी भी वही थे।

मंदिर के प्रांगन में ही संत रामनुज के अनुयायी मद्रास के एक **न्यायाधीश श्री प्रभाकर मुकुंद मोरो की अगुवाई में लगभग 20 फीट ऊँचा राम नाम बखारी का निर्माण कराया है।** इस कोठी में कराड़ो राम नाम, सीता राम लिखकर रखा गया है। इस कोठी में बाल्मीकि रामायण की श्लोकों को शिला पर लिखकर लगाया गया है। इसमें श्रीराम के चारो भाई, पत्नी सहित हनुमान जी की मूर्ति भी लगाई गई है। ज्ञातव्य हो कि इस प्रकार की कोठी उपरोक्त भक्त द्वारा भगवान श्रीराम के ठहराव स्थल पर 108 जगहों पर बनवाया गया है।

अहिल्या स्थान से सटे प्राचीन अहिल्या कुंड भी वर्तमान में स्थित है। इस परिसर में राम.नाम बखारी एवं बगल में अन्य भी मंदिर तथा आश्रम स्थल है। अहिल्या स्थान मंदिर से सटे उत्तर एक विशिष्ट नक्काशीदार विशाल मंदिर है जिसका निर्माण राजपरिवार द्वारा कराया गया था। इस मंदिर का निर्माण भू तल से 40 हाथ नीचे से कत्था चुना से कराया गया था जो आज भी अति सुंदर है। उत्तम देखरेख नहीं होने के कारण इस मंदिर की स्थिति विचारणीय है। इस अमूल्य धरोहर को सँवारने की आवश्यक्ता है । इससे थोड़ा उत्तर 10 बीघा का राजा द्वारा निर्मित पोखरा है।

बगल में सामुदायिक भवन, प्रा० विद्यालय एवं संस्कृत विद्यालय व संस्कृत महाविद्यालय भी है। सरकार द्वारा इस प्रचीन स्थल को पर्यटन केन्द्र घोषित किए जाने के बाद भी कई कमियाँ है। कमतौल से आने वाली मुख्य सड़क की स्थिति अच्छी नहीं है, शौचालय नहीं है एवं अन्य भी कई कमियाँ है। इस स्थान पर विवाह भवन का निर्माण, ठहरने का स्थान व बगल में बिजली सब पावर स्टेशन लगाया गया है।

अहिल्या स्थान में उत्थान के लिए सरकार द्वारा अहिल्या–गौतम महोत्सव के लिए धन उपलब्ध कराया जाता है। इस महोत्सव में सरकार के मंत्री एवं आला अधिकारी सहित भारी संख्या में आम लोग भाग लेते है। इस महोत्सव के लिए वर्ष 2012 में पाँच लाख रूपया सरकार के द्वारा उपलब्ध कराया गया था तथा आगे इसे बढ़ाने की बात कही गई है।

यहाँ चैत (अप्रैल) में रामनवमी के अवसर पर, अगहन (नवंबर) विवाह पंचमी एवं शारदीय नवरात्र के अवसर पर विशाल मेला लगता है।

• श्री गौतम आश्रम स्थल (गौतम कुंड)

अहिल्या स्थान से 3 KM पश्चिम गौतम कुंड है। यहां महर्षि गौतम प्रतिदिन अपने आश्रम अहिल्या स्थान से ब्रह्ममूहूर्त में उठकर जाते थे और वहाँ स्नान, पूजा, तप आदि किया करते थे।

यह स्थान आज भी बड़े चर में स्थित है पहले आश्रम से सटे क्षीरदेई (प्राचीन नाम) (दूधमती) बहती थी जिसके पानी का स्वाद दूध जैसा होता था। कुछ वर्ष पहले नदी की धारा को मोड़ दिया गया जिससे यह अपने स्थल से 300 मीटर पूरब हो गयी है।

यहाँ अवस्थित गौतम कुंड में सात स्त्रोत है जिसमें सालो भर जल निकलता रहता है इस जल का स्त्रोत पाताल माना जाता है। यहाँ गौतम मुनि शिक्षण कार्य किया करते थे। शास्त्रों के अनुसार महर्षि गौतम न्याय शास्त्र के प्रणेता था और इसी स्थल पर अपना गुरूकुल चलाते थे।

आज यहाँ तक पहुँचने के लिए मुख्य सड़क के बाद सड़क की स्थिति अच्छी नहीं है। यह बाढ़ का क्षेत्र है।

इस स्थल पर स्थानीय ग्रामीणों (ब्रह्मपुरा) के सहयोग से करोड़ो रु० की लागत से निर्मित होने वोले मंदिर का भवन निर्माणाधीन है।

इस स्थान को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। यहाँ श्रीराम जानकी, हनुमान व गौतम की प्रतिमा स्थापित है। यह क्षेत्र काफी बड़ा है। स्थानीय जानकारों द्वारा बताया जा रहा है कि यहाँ महर्षि गौतम के समय में 88,00,000 (अट्ठासी लाख) मुनि आये थे। इससे इसके क्षेत्रफल का अंदाजा लगाया जा सकता है।

• विद्यापति डीह बिस्फी : (ग्राम+प्रखंड–बिस्फी, जिला–मधुबनी)

महाकवि विद्यापति मिथिला के चमकते हुए सितारे है। खासकर मिथिला क्षेत्र के लिए महाकवि को गुणगान प्रत्येक घर में होता है। महाकवि के पिता का नाम श्री गणपति ठाकुर तथा माता का नाम हँासिनी देवी था। हलांकि विद्यापति के जन्म को लेकर मतैक्य नहीं है।

ये तिरहुत के राजा कीर्ति सिंह के दरबार में नव रत्न थे। इनके पिता गणपति ठाकुर भी कीर्ति सिंह के यहाँ प्रमुख कवि एवं पंडित थे।

विद्यापति ने कीर्तिसिंह की वीरता का बखान 'कीर्तिलता' में किया है। कीर्तिलता एवं कीर्तिपताका अवहट्ट में की गई प्रमुख रचना है। महाकवि राजा शिवसिंह एवं लखिमा देवी की प्रशंसा भी अपने काव्यों में किया है। महाकवि के शब्दों में **''देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तैं तैसन जपओ अवहट्ठा।''**

यहाँ विद्यापति की पुण्य तिथि कार्तिक पूर्णिमा से दो दिन पहले विशाल मेला लगता है जिसमें दूर.दूर से पर्यटक आकर इस पावन भूमि का दर्शन करते है। वहीं विद्यापति की स्मृति में झंझारपुर में विद्यापति टावर का उद्घाटन मुख्यमंत्री श्री नितीश कुमार के द्वारा किया गया है।

पर्यटन उद्योग के लिए यह स्थल अत्यंत उपयुक्त है। हाल ही 2005.10 पंचवर्षीय योजना में बिहार सरकार (नीतिश कुमार मुख्यमंत्री) द्वारा विद्यापति की पूण्य तिथि को राजकीय पर्व में धोषणा कर एक महत्वपूर्ण

एवं ऐतिहासिक फैसला लिया गया है। इससे न केवल मिथिलांचल में बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष में चर्चित महाकवि विद्यापति की रचनाओं का आधार स्तंभ और मजबूत होगा।

• कालीदास डीह (mPpSB)

मधुबनी जिलान्तर्गत बेनीपट्टी प्र० + अनुमंडल से 5 झड पश्चिम उच्चैठ ग्राम स्थित कालीदास डीह लगभग 2,200 वर्ष प्राचीन है।

उज्जैन म० प्रदेश के राजा विक्रमादित्य के क्षेत्र के रहने वाले महामूर्ख कालिदास (कालिया) अपनी प्रकांड विद्वान पत्नी विद्योतमा के दंश भरी वचनों से त्रस्त होकर विद्वान होने का संकल्प मन में लेकर निकल पड़े। फिर चलते.चलते इस स्थान पर आ गए जहाँ कालान्तर में एक गुरूकुल उच्चपीठ चलता था। इसी उच्चपीठ के नाम से इस गाँव का नाम उच्चैठ पडा़।

प्रकांड विद्वान की प्रसिद्धि पाकर फिर कालिदास अपनी पत्नी विद्योतमा से शास्त्रार्थ कर विजय पाये और उनके पश्चाताप पूर्ण अनुनय विनय पर उनके साथ गए।

इस प्रकार संस्कृत के इस प्रकांड विद्वान ने कई ग्रंथों की रचना किए जिनमें

1. कुमार सम्भवम :– (इसमें पार्वती की पूर्ण विशेषता का वर्णन है, पार्वती की पूर्ण विश्लेषण से भगवान शंकर ने उन्हें कुष्ट का श्राप भी दिया था)
2. रघुवंशम :– (इसमें मेघ को दूत मानकर अपन पत्नी विद्योतमा को पत्र लिखें है)
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम – (इसमें शकुन्तला के पुत्र का विवरण प्रमुख है।)

इस स्थान कालीदास डीह पर वातावरण पूर्ण रमनीय एवं ज्ञान से ओत.प्रोत है। स्थान की वायु इतनी निर्मल एवं पवित्र है कि वहाँ रूकने से काफी थके.मांदे लोग एवं जीव पूर्ण शांति का अनुभव करते है। इस स्थान पर देश .विदेश से पर्यटक आतें हैं और यहाँ की मिट्टी ले जाते है।

इस स्थान को सुन्दर बनाने में बेनीपट्टी के तत्कालीन अनुमंडलाधिकारी श्री रघुनाथ सिंह ब्पअपस S.D.O (पता शिवहर जिला के पहाड़पुर) का पूर्ण सहयोग रहा है। इनके अपूर्व प्रयास से ट्ए 14,20,000 से 1612 फीट चारदिवारी निर्माण कार्य एवं कालिदास की कई प्रतिमाऐं बनवायी गई है। इस स्थल पर लगे बोर्ड (2012) के अनुसार स्थानीय विधायक श्री रामाशीष यादव के सहयोग से ट्ए 6,00,000 की राशि से शौचालय निर्माण कार्य कराया जा रहा है।

यहाँ धर्मशाला का अभाव है।

पिछले दशक में भारतीय पुरातत्व विभाग के निदेशक डॉ० पी. के. मिश्रा की देख–रेख में अठारह सदस्यों का एक दल यहाँ शोध के उद्देश्य से आयी थी। इसे आरंभिक साक्ष्य के रूप में लाल एवं भूरे मृदभांड मिले। पुरातत्ववेत्ताओं की टीम ने इस मृदभांड की अवधि 2000 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व बतायी थी। डॉ० पी. के. मिश्रा के अनुसार इतने साक्ष्य मिलने से स्पष्ट हो जाता है कि कालिदास मिथिला के ही थे।

• उच्चैठ भगवती मंदिर :

कालीदास डीह से लगभग 1 झड उत्तर की दूरी पर कालीदास को वरदान देने वाली अति प्राचीन मंदिर माँ भगवती का है। यह स्थान अति सुंदर एवं भव्य है। यहाँ सालों भर मेला लगा रहता है। लेकिन आश्विन मास में दूर्गा पूजा के अवसर पर यहाँ भक्तों की अपार भीड़ होती है। यह स्थान उच्च शक्ति पीठ के रूप में विख्यात है। इस मंदिर में आज भी पूर्ण श्रद्धा भाव से पूजा अर्चना करने पर मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। इस स्थान पर देश.विदेश से पर्यटक पहूँचते है। और माता की पूजा.अर्चना करते है।

• राजनगर

दरभंगा मधुबनी रेलखंड में राजनगर स्टेशन है। यह मधुबनी से 15 KM उत्तर की दिशा में अवस्थित है। राजनगर, नाम से ही स्पष्ट है कि राजा का नगर । इस राजनगर को दरभंगा के महाराज, महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह एवं इनके पूर्वजों द्वारा बसाया गया था। यहाँ का राज परिसर पर्यटन का अनुपम केन्द्र है। इस परिसर में अनेकों पुराने, विशाल, भव्य एवं कलाकृतियों से पूर्ण मंदिरें है। कई राज भवन अपने गौरव शाली अतीत का बयान कर रहे है। जिनकों देखने मात्र से ही मन रोमांचित व आश्चर्यचकित हो जाता है। राज

परिसर विशाल एवं सुन्दर है। इसके चारों ओर चारदिवारी है जों इस परिसर की सुरक्षा व्यवस्था की अदभूत मिशाल है। परिसर के चारों तरफ प्रवेश द्वार बना है। प्रवेश द्वारों की बनावट, इसकी शिल्पकला एवं इनमें की नक्काशी इसकी विशालता एवं सुन्दरता को चार चाँद लगा देते है। 31 मार्च 1934 को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी यहाँ हिन्दु रोमन शैली के भवनों को देखने पहुँचे थे।

इस अनुपम विशाल छवि एवं मंदिरों का उचित देखरेख नहीं हो पाने के कारण दिनानुदिन ये अपना आस्तित्व खोते जा रहे है। इस परिसर में कुछ ढाँचागत व्यवस्था कर इसे पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है। इसे उतरी भारत में महत्वपूर्ण पर्यटन उद्योग के रूप में विकसित किया जा सकता है। वर्तमान में इस परिसर में S.S.B (सशस्त्र सीमा बल) का केन्द्र बना दिया गया है। S.S.B कैम्प के कारण राज परिसर के मुख्य भवनों का उपयोग S.S.B के लिए किया जा रहा है। जिससे इस परिसर में बाहरी पयर्टक, शोधर्कताओं एवं स्थानीय लोगों की आवाजाही में रूकावट पैदा होती है। जिसके कारण अतीत की इस संवेदनशील महता एवं उच्च गुणवत्ता वाले इस क्षेत्र के विकास एवं जागृति की संभावनाऐं संकुचित होती जा रही है।

इस परिसर में अनेक मंदिरें है। इस परिसर स्थित राजभवन में विशेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय (1911 में) स्थापित की गई है। महाविद्यालय ल० ना० मि० विश्वविद्यालय दरभंगा की अंगीभूत इकाई है।

इस परिसर में कई दर्शनीय मंदिर एवं भवने है जिनमें निम्नलिखित प्रमुख है–

1. कामाख्या मंदिर : महाराज रामेश्वर सिंह की दीक्षा पूर्ण अभिषेक संस्कार कामाख्या मंदिर में ही हुआ था। कामाख्या में वे अपनी साधना कामाख्या पीठ की सबसे उँची चोटी भुवनेश्वरी में करते थे। तत्पश्चात जब राजनगर आए तो यहाँ भी कामाख्या मंदिर बनाकर माँ भुवनेश्वरी की स्थापना तंत्र विधान से 1924 से 1927 तक के बीच में किए । महाराज स्वयं रात्री के 9 बजे से प्रातः 3 बजे तक कई बार कामाख्या मंदिर में पूजा अर्चना किया करते थे।

इस मंदिर में लोहे की विशाल घूमावदार सीढ़ी है जो मंदिर की उपरी तल तक जाती है। इस मंदिर के नीचे भी अनेक कोठली है जहाँ पहले पंडित लोग पूजा.पाठ, जाप किया करते थे।

यह मंदिर राज परिसर के उतरी भाग में अवस्थित है। यह काफी विशाल एवं कलात्मक है इसमें माँ भुवनेश्वरी कामाख्या विराजमान है। कहा जाता है कि इस कामाख्या भुवनेश्वरी मंदिर में यदि 1 माह तक कोई अनुष्ठान कर लेगा तो उसकी सिद्धि प्राप्त हो जाएगी। कई लोग दूर्गा.पूजा के अवसर पर आकर अनुष्ठान करते है। और इच्छित फल पाते है।

2. संगमरमर की काली मंदिर (निर्माण 1924.25) : महाराजा रामेश्वर सिंह जहाँ कहीं भी अपने निवास के लिए महल बनवाते वहाँ पहले अपनी इष्ट देवी भगवती काली की मूर्ती प्रतिष्ठापित करवाते थे। हाल ही में राजनगर परिसर में माँ काली मंदिर में इनकी सुंदर विग्रह की स्थापना जो 88,000 रुपये मूल्य की है, सन् 2006 में अजमेर से मंगाकर की गई है। स्थापना के दिन से प्राण प्रतिष्ठा के दिन तक 108 ब्रह्मण पुरूष चरण में लगे हुए थे। इसके अलावा हजारों संख्या में ब्राह्मण पंडित प्राण.प्रतिष्ठा के दिन मंत्रोच्चारण कर रहे थे। महाराज पंचदेवोपासक थे, किन्तु इष्ट माँ काली थीं। श्री श्री 108 काली मंदिर विशुद्ध स्फटिक संगमरमर का बना हुआ है जो काफी कीमती एवं अमूल्य धरोहर है। संगमरमर के प्लेटों पर बनाए गए कलात्मक चित्र और प्लेटों पर संस्कृत श्लोक लिखा हुआ अपने में अद्वितीय है। भारत वर्ष में इस तरह की मंदिरें दूलर्भ है। मंदिर स्थित माँ काली की मूर्ति सौम्य, सुंदर एवं विशाल है तथा नित्य इनकी तीन बार आरती होती है। मंदिर के आगे विशाल घंटा है तो अष्ट द्रव्य का बना है। आरती के समय यह घंटा बजता हैं तो 5 झड तक इसकी आवाज सुनाई पड़ती हैं ऐसा देखा गया है कि रात में जब आरती का घंटा बजता था तो व्याल (सियार) मंदिर के चारो ओर बनाए गए चबुतरों पर आकर पंक्तिबद्ध होकर बैठ जाते थे। तत्पश्चात पूजारी द्वारा सभी को भोजन देने के बाद ही वह जाते थे।

ज्ञातव्य हो कि श्री यंत्र भी इसी मंदिर के उपर तल पर रखा था जो विगत 2001 में चोरी हो गई इस यंत्र के संबंध में कहा जाता है कि जिसके पास यह यंत्र रहेगा उसकी शक्ति एवं वैभव कभी भी कम या क्षीण नहीं होगी । यहाँ का श्री यंत्र तांत्रिक एवं वैदिक रूप से बनाया गया था।

- **सौराठ**

यह मधुबनी–जयनगर रोड के किनारे बसा गांव है और इसमें सोमनाथ महादेव नामक एक मंदिर है। विवाह की बातचीत के लिए मैथिली ब्राह्मणों द्वारा आयोजित वार्षिक सभा के लिए इसका महत्व है। कई पंजीकार जो विभिन्न परिवारों के वंशावली रिकॉर्ड को यहां सुरक्षित रखते हैं तथा विवाह संस्कार संपन्न कराने में अपना योगदान देते हैं।

- **द्रव्येश्वर नाथ महादेव मंदिर, देवकुलीधाम, बिरौल, दरभंगा :**

त्रेता युगीन प्राचीन शिव मंदिर बिरौल–कुशेश्वरस्थान पथ में देवकुली गांव में अवस्थित हैं। यह शिव का प्रसिद्ध एवं चमत्कारिक मंदिर है। यहाँ सालों भर श्रद्धालुओं का ताँता लगा रहता है।

- **खुदनेश्वर स्थान समस्तीपुर**

खुदनेश्वर स्थान महादेव मंदिर समस्तीपुर जिला के मोरवा प्रखंड में स्थित गंगा–यमुनी तहजीब से सुशोभित प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में एक तरफ शिव के उपासक की कब्र है वहीं दुसरी तरफ शिवलिंग है। यहाँ प्रत्येक मास श्रद्धालु पहुँचते हैं। इसके अलावे समस्तीपुर जिला में उदयनाचार्य डीह, करियन, रोसड़ा, पांडव डीह, उगना स्थान, सिसईगढ़ आदि प्रमुख पर्यटक स्थल हैं।

- **दरभंगा राज किला**

दरभंगा में 1934 ई० के प्रलयंकारी भूकंप के बाद दरभंगा महराज के द्वारा राज किला की स्थापना की गई थी। वर्तमान में यह ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के पश्चिम में अवस्थित है। किला के अन्दर कई भव्य मंदिर बनाये गए है। इसकी उची दिवार राजस्थान एवं दिल्ली में अवस्थिति ऐतहासिक किलो की भांति दर्शनीय है।

- **श्यामा मंदिर**

मिथिला की गौरवशाली एवं ऐतिहासिक अध्यातम परंपरा तथा तंत्र साधना की परंपरा में महराजाधिराज डॉ. कामेश्वर सिंह ने अपने पिता स्वर्गीय महराजधिराज रामेश्वर सिंह की चिता पर विशुद्ध तांत्रिक रीति से भव्य मंदिर प्रतिष्ठापित है।

- **मजार**

दरभंगा जिला अंतर्गत दिघी तालाब के किनारे अवस्थित हजरत भीखा साह सलामी रहमतुल्लाह अले का मजार अवस्थित है। इसे मकदूम बाबा के नाम से भी जाना जाता है। यह मजार लगभग 140 वर्ष पुराना है।

निष्कर्ष :

मिथिलांचल (दरभंगा प्रमंडल) के विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं अन्य पर्यटन केन्द्र मौजूद हैं। मिथिलांचल के दर्शनीय स्थलों का पर्यटनीय विकास के लिए सरकारी स्तर पर तथा नीजी कम्पनियों व व्यक्तियों द्वारा पूंजी निवेश कर होटल, हॉस्पीटलीटी एवं अन्य ढाँचागत सुविधाऐं प्रदान करने के उचित अवसर मौजुद है। इस क्षेत्र में निवेशकों को उचित लाभ मिलने एवं क्षेत्रीय जीवन स्तर संवारने का सुन्दर वातावरण उपलब्ध है।

बिहार के सड़कों में सुधार हुआ है। नए राष्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य उच्च पथों का निर्माण किया जा रहा है जो प्रमुख दर्शनीय स्थलों के आसपास से होकर गुजरती है। मिथिलांचल को पर्यटन केन्द्र में विकसित बनाने हेतु बिहार सरकार के द्वारा विकसित किए जा रहे आधारभूत संरचनाओं के अलावे पर्यटन विभाग द्वारा भी श्रम एवं पूंजी लगाकर इसे विकसित किया जा सकता है। यहाँ पाँच सितारा होटल, उच्च स्तरीय मनोरंजन गृह की स्थापना, तथा कई सृजनात्मक कार्यों द्वारा इसमें सफलता प्राप्त किया जा सकता है और मिथिलांचल के इन नैसर्गिक उपहारों से बदलते हुए वैश्विक परिवेश में पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। इससे लोगों के

रोजगार एवं आय में वृद्धि होगी तथा क्षेत्रीय विकास के साथ.साथ बिहार आर्थिक सुसम्पन्न राज्य बनकर राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विख्यात हो सकेगा।

संदर्भ स्त्रोतः

1. दास, तुलसी (2016), गीता प्रेस गोरखपुर, बाल काण्ड, अहिल्या उद्धार, चौपाई ।। 6 ।।
2. दास, तुलसी (2016), गीता प्रेस गोरखपुर, बाल काण्ड, अहिल्या उद्धार, दोहा पृ० सं० –169
3. प्रभात खबर, 25 नवम्बर 2012, पृष्ठ – 6
4. दैनिक जागरण, मुजफ्फरपुर, 17 जुलाई 2014 पृ०–6
5. विद्यापति, कीर्तिलता प्रथम पल्लव
6. हिन्दुस्तान मुजफ्फरपुर, 18 जनवरी 2012, दरभंगा पेज
7. हिन्दुस्तान मुजफ्फरपुर, 03 दिसम्बर 2013, दरभंगा पेज
8. नवनीत.पी.(2015), ई० पर्यटक आज्ञापत्रः पर्यटन यात्र आसान बना, योजना, पृष्ठ–14
9. दैनिक जागरण, मुजफ्फरपुर, 17 जुलाई 2014 पृ०–6
10. हिन्दुस्तान मुजफ्फरपुर, 23 फरवरी 2017, दरभंगा पेज
11. कर्ण, डॉ० लक्ष्मी, मिथिलांचल की परम्परा, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, किलाघाट, दरभंगा, पृ० 51–72
12. पर्यटन विभाग की वेबसाइट, बिहार सरकार – www.bihartoursim.gov.in
13. स्मारितंत्र, (2010) विनय अग्रवाल तृतीय पुष्प, पृष्ठ – 24–26